ओ३म्

# संकल्प पत्र

भारत स्वाभिमान (न्यास)

युवा भारत

किसान पंचायत

पतंजलि योग समिति

महिला पतंजलि योग समिति

**केन्द्रीय कार्यालय :** भारत स्वाभिमान (न्यास), पतंजलि योगपीठ
(राजीव दीक्षित भवन), महर्षि दयानन्द ग्राम, हरिद्वार-249405 (उत्तराखण्ड)
Telephone : 01334-240008, 273000
E-mail : bharatswabhimanheadoffice@gmail.com
Website : www.bharatswabhimantrust.org

# विषय सूची


1. भारत स्वाभिमान आन्दोलन व संगठन की त्रिसूत्रिय कार्य-योजना 3
2. कालाधन वापस लाने के लिए तीन मुख्य प्रक्रियाएँ 4
3. भ्रष्टाचार को मिटाने के लिए तीन मुख्य प्रक्रियाएँ 5
4. व्यवस्था-परिवर्तन के तीन मुख्य मुद्दे 6
5. महंगाई को दूर करने के तीन उपाय 8
6. बेरोजगारी दूर करने के तीन मुख्य मन्त्र 9
7. गरीबी को दूर करने के लिए तीन मन्त्र 10
8. जनसंख्या को नियन्त्रित करने के मुख्य तीन उपाय 10
9. ब्लैकमनी के तीन अन्य नाम 11
10. राजनैतिक सफलता के तीन सूत्र 11
11. आन्दोलन के तीन चरण 11
12. भारत को विश्व की महाशक्ति बनाने की तीन योजनाएँ 12
13. संगठन की ताकत व तप 12
14. संगठन के सेवा व आन्दोलन के तीन-तीन आयाम 14
15. युवाओं के लिए तीन सूत्र 14
16. संगठन के तीन राजनैतिक लक्ष्य 14
17. जीवन के तीन व्रत 14
18. राष्ट्र की तीन मूलभूत शक्तियाँ 15
19. आर्थिक व्यवस्था (जी.डी.पी.) के तीन मूल आधार 15
20. भारतीय अर्थव्यवस्था की तीन बड़ी वास्तविक सच्चाइयाँ 15
21. तीन प्रायोजित झूठ 16
22. ती बड़े षड्यन्त्र 16
23. कांग्रेस के आर्थिक, धार्मिक व राजनैतिक–तीन बड़े पाप क्या हैं? 18
24. भारत का स्वर्णिम अतीत एवं अखण्ड भारत की सीमाएँ 22
25. धर्म वकर्म का मर्म 23
26. हमारे आन्दोलन व संगठन की मुख्य विचारधारा एवं सिद्धान्त 23

# संगठन का सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक व राजनैतिक सिद्धान्त, लक्ष्य एवं विचारधारा

# भारत स्वाभिमान आन्दोलन व संगठन की त्रिसूत्रीय कार्य–योजना

# भारत स्वाभिमान आन्दोलन के मुख्य तीन लक्ष्य

1. **कालाधन :** 400 लाख करोड़ रुपये के कालेधन को राष्ट्रीय सम्पत्ति घोषित करके देश को दिलाना एवं जल, जंगल, जमीन तथा लगभग 20 हजार लाख करोड़ रुपये की भू–सम्पदाओं को लूटने से बचाना।

2. **भ्रष्टाचार :** भ्रष्टाचार मुक्त भारत का निर्माण करना तथा योग, अध्यात्म एवं संस्कारों का व्यक्ति व समाज में समावेश करके सदाचार को बढ़ाना। शिक्षा में योग एवं उच्च नैतिक मूल्यों का समावेश कराना। बचपन में अच्छे या बुरे जो भी विचार या संस्कार बच्चों को दिये जाते हैं, जीवन भर वही विचार परिपक्व होते हैं

3. **व्यवस्था परिवर्तन :** अन्यायपूर्ण अंग्रेजी व्यवस्था के स्थान पर न्यायपूर्ण स्वदेशी व्यवस्था लागू करके आर्थिक व सामाजिक गैर बराबरी दूर करना। सत्ता, सम्पत्ति संसाधन एवं शासन व्यवस्था में अन्यायपूर्ण स्वामित्व, अन्यायपूर्ण समृद्धि, अन्यायपूर्ण भागीदारी, अन्यायपूर्ण वितरण तथा अन्यायपूर्ण उपभोग को खत्म करके सबको आर्थिक व सामाजिक न्याय दिलवाकर भारत को विश्व की आर्थिक व आध्यात्मिक महाशक्ति बनाना।

**गरीबी** – हमारी गरीबी का कारण हमारी जाति या मजहब नहीं, अपितु कालाधन, भ्रष्टाचार एवं अन्यायपूर्ण व्यवस्था है।

# कालाधन वापस लाने के लिए तीन मुख्य प्रक्रियाएँ

1. F.D.I. के मूल मालिकों का पता लगाने के लिए कानूनी प्रावधान करवाना। लगभग 20 लाख करोड़ रुपये की F.D.I.भारत में आई है, इसकी वर्तमान में कई गुणा कीमत है। देश के साथ धोखा व गद्दारी करके देश का लूटा हुआ धन, ये बेईमान लोग F.D.I. के माध्यम से देश में लाये हैं। F.D.I. में 80% से ज्यादा कालाधन है। F.D.I. के मूल मालिकों का पता लगाने से इन्हीं लोगों का देश व विदेश में जो अन्य अवैध धन व अवैध सम्पत्ति है, उसका भी पता लग जायेगा। अत: F.D.I. कालेधन की चाबी है।
2. हसन अली जैसे हजारों लोगों के नाम तथा 50 हजार से ज्यादा कालेधन के ट्रान्जेक्सन्स की जानकारी सरकारी एजेन्सियों के पास है। इनके पास ही लाखों करोड़ रुपये कालाधन है। ये धन देश को दिलाना तथा इनके नाम सार्वजनिक करना है, जिससे इन लुटेरों के बारे में देश जान सके।
3. अर्थव्यवस्था को पारदर्शी बनाने हेतु बैंकों में गोपनीयता का कानून खत्म करवाना। हवाला, घोटाला, रिश्वतखोरी, बड़े नोट व टैक्स चोरी पर नियन्त्रण करना तथा प्राकृतिक सम्पदाओं व राष्ट्रीय संसाधनों की लूट खत्म करवाना जिससे आगे से कालाधन जमा न हो।

**समस्या** – महंगाई, बेरोजगारी, गरीबी, भूख, गैर-बराबरी एवं नक्सलवाद आदि समस्याएँ वास्तविक नहीं हैं। **साम्राज्यवादी गलत आर्थिक नीतियों व लूट से** क्रूर सत्ताधीशों ने प्रायोजित तरीके से साज़िश करके ये समस्याएँ पैदा की हैं।

# भ्रष्टाचार को मिटाने के लिए तीन मुख्य प्रक्रियाएँ

1. मजबूत **लोकपाल** बनाना तथा **C.B.I.** को स्वायत्त बनाना, साथ ही **C.V.C., C.A.G.** तथा **C.E.C.** (चुनाव आयोग) की नियुक्ति की प्रक्रिया निष्पक्ष करके सभी प्रकार के भ्रष्टाचार पर पूर्ण अंकुश लगवाना।

2. **'पब्लिक सर्विस डिलीवरी गारन्टी एक्ट'** लागू करके सरकारी तन्त्र में 'काम के बदले दाम' (रिश्वत) को पूरी तरह खत्म करवाना। जो सरकारी नौकर तयशुदा समय में काम नहीं करें, उसे दण्डित करना तथा बार-बार गलती करने पर उसे सस्पेंड करने का प्रावधान करवाना। भ्रष्टाचार से जुड़ें मामलों के लिए विशेष अदालतों में प्रतिदिन सुनवाई करके एक तय समय सीमा में विवादों के निपटारें की व्यवस्था होने से भ्रष्टाचार के आरोपी अपराधियों को शीघ्र दण्ड मिल सकेगा।

3. **शिक्षा में सदाचार बढ़ाना।** बचपन में जैसे संस्कार व विचार मिलते हैं, उनका असर व्यक्ति के पूरे जीवन पर पड़ता है, बचपन के बहुत अच्छे विचार एवं संस्कार आगे के जीवन में बहुत अच्छा इन्सान तथा बुरे विचार एवं संस्कार व्यक्ति को आगामी जीवन में बहुत बुरा भ्रष्टाचारी व दुराचारी आदि बना देते है। अतः सदाचार को बढ़ाए बिना, भ्रष्टाचार कम हो ही नहीं सकता। चरित्र निर्माण ही युग निर्माण का आधार हैं, अतः बहुत कुछ बदलना पड़ेगा। वर्तमान संस्कारहीन शिक्षा व अश्लीलता-पूर्ण दूरदर्शन प्रसारण नीति के कारण चारों तरफ कत्लखाने, शराब व नशा की दुकानें व व्यभिचार का वातावरण तैयार हो रहा है।

# व्यवस्था–परिवर्तन के तीन मुख्य मुद्दे

1. **'राष्ट्रीय किसान आय आयोग'** का गठन करके किसानों को फसल का लाभकारी मूल्य दिलाना। किसानों व कारीगरों को **'कुशल श्रमिक'** का दर्जा दिलाकर इनका शोषण खत्म करवाना।
2. **भारतीय भाषाओं में उच्च व तकनीकी शिक्षा** की व्यवस्था करवाकर गरीब, मजदूर, किसान व अन्तिम आदमी को भी डॉक्टर, इंजीनियर, आई.ए.एस. व अन्य बड़ी पढ़ाई व कैरियर का हक दिलाना। इससे आम आदमी भी देश के नीति निर्धारण व व्यवस्था को संचालित करने में बड़ी भूमिका निभा पायेगा। जब जापान, जर्मनी, फ्रांस, चीन व रूस आदि में अपने देश की भाषा में शिक्षा है तो भारत में क्यों नहीं हो सकती? भाषा के नाम पर अन्याय व पक्षपात खत्म करवायेंगे।
3. **महंगाई, बेरोजगारी, गरीबी व अशिक्षा से मुक्त शासन** लायेंगे और सामन्तवादी व्यवस्था को बदलकर सबको न्याय दिलवायेंगे।

क. जहाँ आम आदमी के बच्चे पढ़ते हैं तथा बीमार होने पर इलाज कराते हैं, वहीं विधायक, सांसद व अन्य सरकारी तन्त्र के शीर्ष लोगों के लिए जब पढ़ाई व दवाई की व्यवस्था होगी तो कुछ ही दिनों में सारी व्यवस्था अपने आप बदल जायेगी। पब्लिक ट्रॉन्पोर्ट से नेताओं की कुछ यात्राएँ सुनिश्चित करनी चाहिए तथा लालबत्ती के उपयोग की परम्परा जो सामन्तवादी सोच व गुलामी की प्रतीक है, यह बन्द होनी चाहिए। इससे यातायात में एक आदर्श व न्यायपूर्ण सुधार आयेगा।

ख. आम आदमी की तरह विधायक, सांसद, मंत्री, राज्यपाल व राष्ट्रपति आदि के आवास की व्यवस्था होगी। D.M., D.C., M.L.A., M.P. व गवर्नर आदि के सरकारी आवासों को नीलाम करके लाखों

करोड़ रुपये देश के विकास व भलाई के लिए मिल जायेंगे।

ग. सभी सरकारी योजनाओं का नाम एक परिवार विशेष के नाम पर नहीं होगा। देश के सभी ऋषि, ऋषिकाओं, वीर, वीराङ्गनाओं व महापुरुषों के नाम पर देश की योजनाओं का नाम होगा। ये देश मात्र एक खानदान की जागीर या बपौती नहीं है।

घ. 99% नेताओं की अनावश्यक सुरक्षा का तामझाम खत्म होगा, तो अपने आप वे सबकी सुरक्षा के बारे में सोचेंगे, कानून व नीतियों को ठीक करेंगे एवं अपराध पर नियन्त्रण करवायेंगे।

ङ. सभी कानून व नीतियों के निर्माण में जनता की भागीदारी होगी। केवल कुछ साम्राज्यवादी ताकतों, विदेशी कम्पनियों व ताकतवर लोगों के हित में ही नीतियाँ नहीं बनवाई जायेंगी।

च. अभी तक की बनाई गई नीतियों व कानूनों की पुनः समीक्षा होगी तथा 1947 से लेकर अब तक के करीब 200 लाख करोड़ के सरकारी बजटों की भी समीक्षा होगी और देश के लूटे हुए धन की वसूली की जायेगी तथा लुटेरों को सजा दिलाई जायेंगी।

छ. अनिवार्य मतदान, स्टेट फन्डिंग इलेक्शन एवं अन्य जरूरी चुनाव सुधार करवायेंगे जिससे अच्छे लोग और अधिक संख्या में चुने जा सकें।

ज. जल, जंगल, जमीन, प्राकृतिक सम्पदाओं व अन्य **राष्ट्रीय संसाधनों के दोहन, नीलामी व रॉयल्टी की प्रक्रिया पूर्णरूप से पारदर्शी व न्यायपूर्ण बनवायेंगे।**

झ. अंग्रेजों के वक्त के बने सभी एक्ट व कानूनों में न्यायपूर्ण बदलाव किया जायेगा। जैसे 1861 का बना पुलिस एक्ट, 1860 का बना इंडियन पीनल एक्ट, 1894 का बना प्रिज़न्स एक्ट, 1894 का बना लैंड-एक्विज़िशन एक्ट, 1872 में बने इंडियन एविडेंस एक्ट,

1872 के ही बने इण्डियन कॉन्ट्रैक्ट एक्ट। इसी तरह 1760 में रोबर्ट क्लाईव ने गोहत्या, शराब व वेश्यावृत्ति जैसे पापों को कानूनी स्वीकृति देकर जो अनर्थ किया, इस पूरी व्यवस्था को ही बदला जायेगा। विधि-व्यवस्था और न्याय-व्यवस्था को स्वदेशी बनाया जायेगा।

## महंगाई को दूर करने के तीन उपाय

1. गैस, डीजल, व पैट्रोल आदि सब लगभग आधे दाम पर दिलवायेंगे। क्योंकि इनका वास्तविक मूल्य इतना ही है।
2. लगभग 32 प्रकार के सभी टैक्स खत्म करवायेंगे। इससे साबुन, शैम्पू, साईकल, मोटर साईकल, गाड़ी व घड़ी से लेकर सभी रोजमर्रा की चीजें 30% से 50% सस्ती हो जायेगी। पाँच या दस लाख से अधिक की आमदनी पर बहुत कम इन्कम टैक्स लगाया जाए तथा ट्रांजेक्शन टैक्स आदि के रूप में सिंगल टैक्सेशन सिस्टम लागू किया जाये। इससे देश के लोगों की बचत बढ़ेगी और सब देशवासी धनवान् बनेंगे।

   यदि सरकार को चलाने के लिए तथा सार्वजनिक विकास कार्यों के लिए जो भी धन की कमी होगी, तो बेईमान लोगों पर कार्यवाही करके उनसे धन वसूली की जायेगी व कालेधन से इसकी पूर्ति की जायेगी। आम आदमी की जेब पर डाका नहीं डाला जायेगा।
3. खेती, उद्योग, गृह उद्योग, लघु उद्योग, ग्रामोद्योग का विकास करके एवं सेवाक्षेत्र में प्रोफेशनल्स की अधिक उपलब्धता तथा सभी क्षेत्रों में भरपूर उत्पादन एवं वितरण आदि प्रक्रियाओं को ठीक करके महंगाई पर पूर्ण नियन्त्रण किया जायेगा।

# बेरोजगारी दूर करने के तीन मुख्य मन्त्र

1. देश का एक ग्राम भी लोहा, एल्युमिनियम, बॉक्साईट अयस्क व अन्य बेशकीमती कच्चा माल (Raw Materials) देश के बाहर नहीं जायेगा। तैयार माल का ही निर्यात होगा। इससे करोड़ों लोगों को देश में रोजगार मिलेगा। कच्चा लोहा यदि 5 रुपये का बाहर बिकता है तो 40 से 50 रुपये का वही तैयार लोहा चीन हमें वापस बेचता है। इससे देश का बहुत बड़ा आर्थिक नुकसान होता है।
2. खेती, उद्योग, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि सेवा क्षेत्रों, अनुसंधान, विकास तथा नदियों को जोड़ना व अन्य जल प्रबन्धन आदि के क्षेत्रों में जब लाखों करोड़ रुपयों के कालेधन को विदेशों से लाकर राष्ट्रीय सम्पत्ति घोषित करके देश की तरक्की में लगाया जायेगा तो करोड़ों युवकों व आम लोगों को रोजगार मिलेगा।
3. बेरोजगार व कम पढ़े लिखे लोगों के लिए बड़ी संख्या में विशेष वोकेशनल ट्रेनिंग व टेक्नीकल ट्रेनिंग सेन्टर्स बनवायेंगे तथा पूरी दुनियाँ की जरूरतों को भारत से पूरा करने के लिए एक विशेष कार्ययोजना बनवायेंगे तथा भारत को निर्यात के क्षेत्र में चीन से भी आगे लेकर जायेंगे।

**हक की जंग** – हमें अपने हक की लड़ाई खुद लड़नी है। कोई राजनैतिक दल या खानदान हमारी लड़ाई लड़ने वाला नहीं है।

**गैर-बराबरी**–1% लोगों ने देश की सम्पूर्ण सम्पत्ति व संसाधनों पर एकाधिकार जमा लिया है, इसी के कारण 99% लोग गरीब व दु:खी हैं तथा आर्थिक व सामाजिक गैर-बराबरी है।

# गरीबी को दूर करने के लिए तीन मन्त्र

1. जब सबको रोजगार व समान शिक्षा आदि की व्यवस्था होगी व सबको पूरा काम व किसान व कारीगर आदि को उनकी मेहनत का पूरा दाम मिलेगा तो सब धनवान होंगे, कोई गरीब नहीं रहेगा।
2. सभी प्रकार के टैक्स कम होने से महंगाई कम होगी तथा लोगों की बचत बढ़ेगी तो गरीबी अपने आप मिटेगी।
3. भूमिहीनों को भूमि तथा प्राकृतिक सम्पदाओं व राष्ट्रीय संसाधनों में जब सब 125 करोड़ भारतीयों को उनका न्यायपूर्ण हक मिलेगा तो एक परिवार को औसत रूप से भविष्य में लगभग 10 करोड़ रुपये प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से मिलेगा और तब कोई भी भारतीय गरीब नहीं रहेगा। गरीबी मिटाने के नाम पर एक दल विशेष देश को 65 सालों से धोखा दे रहा है।

# जनसंख्या को नियन्त्रित करने के मुख्य तीन उपाय

1. गरीबी व अशिक्षा जनसंख्या के मूलभूत कारण हैं, ये दोनों खत्म करके हम आबादी को नियन्त्रित करवायेंगे।
2. अवैध रूप से जो बांग्लादेशी, पाकिस्तानी व अन्य देशों के जो भी नागरिक हिन्दुस्तान में रह रहे हैं, उनको बाहर निकलवायेंगे।
3. ऊपर के दो उपाय अपनाने के बावजूद भी यदि स्थिति नियन्त्रण में नहीं आयेगी तो चीन की तरह कठोर कानून भी बनाये जा सकते हैं। तथा कम बच्चे पैदा करने वाले लोगों को शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, टैक्सेशन एवं अन्य क्षेत्रों में विशेष प्रोत्साहन व प्राथमिकता देकर लोगों को जनसंख्या नियंत्रित करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता हैं, क्योंकि देश में हम जमीन व अन्य संसाधनों को नहीं बढ़ा सकते और यदि हमने अपनी आबादी को नियन्त्रित नहीं किया

तो फिर गरीबी, भूख, कुपोषण व अन्य समस्याओं को कभी भी नहीं मिटाया जा सकता।

## ब्लैकमनी के तीन अन्य नाम

बिना श्रम का करप्टमनी हवाला मनी, पैरेलल इकॉनोमि (Parallel Economy) यह भी कालेधन का ही एक रूप है, साथ ही अन-अकाउन्टेड मनी, अन्डर-ग्राउण्ड मनी तथा इल्लीगल मनी व इल्लीगल एसेट्स-ये कालेधन के ही तीन अन्य नाम हैं, अर्थात् पैसा तो है परन्तु पेपर पर उस पैसे का हिसाब नहीं है, क्योंकि पेपर पर आने से सरकारी व्यवस्था को व देश को पता चल जायेगा तथा गलत तरीकों से कमाया ये धन इन बेईमान लोगों के हाथ से निकल जायेगा।

## राजनैतिक सफलता के तीन सूत्र

1. मजबूत संगठन, 2. मजबूत राजनैतिक तन्त्र, 3. निष्कलंक उम्मीदवारों को जिताने की ताकत।

## आन्दोलन के तीन चरण

जन-जागरण, सत्ता परिवर्तन व व्यवस्था परिवर्तन करना अर्थात् व्यवस्था का चरित्र बदलकर उसे न्यायपूर्ण बनाकर आर्थिक व सामाजिक गैर बराबरी खत्म करना।

**आत्मा की पुकार**– हर समय आत्मा में परमात्मा की प्रेरणा या पुकार उठती रहती है, इसका आदर करें, जिस काम में आत्मा साथ दे उसे जरूर करना, चाहे लाख विपत्तियाँ आये तथा जहाँ आत्मा रोके, वहाँ चाहे दुनियाँ की दौलत मिलें उधर एक कदम भी नहीं बढ़ाना।

## भारत को विश्व की महाशक्ति बनाने की तीन योजनाएँ

1. जब 400 लाख करोड़ रुपये कालाधन देश को मिलेगा तथा गाँव, किसान, मजदूर, कारीगर व आम आदमी की भलाई विकास या खुशहाली के काम में लगेगा, तो भारत दुनियाँ का सबसे ताकतवर मुल्क बनकर उभरेगा।
2. अमेरिका को एक हजार लाख करोड़ रुपये, ब्रिटेन को 500 लाख करोड़ रुपये, जर्मनी व फ्रांस को 250-250 लाख करोड़ रुपये तथा लग्ज़म्बर्ग जैसे यूरोप के छोटे-छोटे देशों को 100-100 लाख करोड़ रुपये का ये कालाधन ही अधिकाँशत: विदेशी कर्ज के रूप में लिया हुआ है जब लौटाना पड़ेगा तो ये देश **दिवालिया व कर्जदार** होंगे तथा जहाँ से ये कालाधन लूटा गया है- वह भारत, मिडिल-ईस्ट व एशिया दुनियाँ में सबसे धनवान होंगे। वर्ल्ड बैंक, I.M.F., W.T.O., U.N.O., W.H.O. एवं अन्य विश्वस्तरीय संस्थान व संगठन भारत के नियन्त्रण व नेतृत्व में संचालित होंगे।
3. 20 हजार लाख करोड़ रुपये से ज्यादा की भू-सम्पदाओं की जब लूट बन्द होगी तथा न्यायपूर्ण व्यवस्थाएँ होंगी, जल, जंगल, जमीन व जड़ी-बूटियों व अन्य प्राकृतिक सम्पदाओं, संसाधनों का सही उपयोग व देश की प्रतिभाओं का देश में सम्मान होगा, तो भारत निश्चित रूप से विश्व में महाशक्ति के रूप में उभरेगा।

## संगठन की ताकत व तप

1. पूज्य स्वामीजी महाराज द्वारा 11 लाख किलोमीटर की लोक मंगल यात्रा, 11 करोड़ से अधिक लोगों की सभाएँ, 11 हजार से अधिक शिविरों में आए लोगों के भीतर आत्मीयता, प्रेम, ज्ञान, तेज, देशभक्ति और अध्यात्म-चेतना जगाना वह महान् तप है, जो संगठन का

आंतरिक बल और केन्द्रीय शक्ति है, यही संगठन की नाभि का अमृतकुंड और हृदय की अध्यात्म-ज्योति है, राष्ट्रीय कुंडलिनी-शक्ति का जागरण है, राष्ट्रभक्ति के महाभाव का उदय है। इस महाभाव के उदय से आत्मबल-सम्पन्न, राष्ट्रभक्ति-सम्पन्न बने करोड़ों भारतीयों के हृदय की कृतज्ञता का भाव हमारी सबसे बड़ी ताकत है।

2. 4 जून, 2011 में रामलीला मैदान में रात को 1:00 बजे अनशन कर रहे आन्दोलनकारियों पर लाठीचार्ज, बहन राजबाला की हत्या तथा पण्डाल में आग लगाकर साजिश के तहत श्रद्धेय स्वामी जी महाराज की हत्या का षड्यन्त्र, 3 जून, 2012 जन्तर-मन्तर पर एकदिवसीय अनशन तथा 9 अगस्त से 14 अगस्त, 2012 तक पुनः दिल्ली में ऐतिहासिक आन्दोलन इसी प्रकार वर्षों से चल रही निःस्वार्थ सेवा व आन्दोलन और साथ ही ग्राम, प्रखण्ड, बूथ, वार्ड, तहसील तथा 650 जिलों तक फैला मजबूत संगठन इसी तप और ताकत का साकार रूप है। तप का फल है शक्ति, शक्ति की सार्थकता तप की वृद्धि में, शुभ के विस्तार और अशुभ के दमन में है। जब एक-एक गाँव में कम से कम 100 जवान, 100 किसान व 100 मातायें आन्दोलन के लिए तैयार हो जायेंगे तो देश में बड़े से बड़ा परिवर्तन करने में हम सक्षम हो जायेंगे। हम यह काम करेंगे और जरूर बदलाव लायेंगे।

3. पक्षपात पूर्ण डबल C.B.I. जाँच, आये दिन झूठी अफवाहें, साज़िश के तहत सैकड़ों सरकार के नोटिस व केस लगाने के बावजूद कांग्रेस एक भी जगह हमें गलत साबित नहीं कर पायी। 100 करोड़ से ज्यादा देशवासियों का संगठन व आन्दोलन को समर्थन, सहयोग व सद्भाव ही हमारी सच्ची व सात्विक ताकत है।

## संगठन के सेवा व आन्दोलन के तीन–तीन आयाम

**सेवा–** 1. योग सेवा (नियमिदत योग कक्षा का संचालन), 2. स्वदेशी सेवा, 3. ग्राम सेवा की 11 सूत्रीय योजना का क्रियान्वयन।

**आन्दोलन–**1. भ्रष्टाचार–मुक्त भारत 2. अन्याय–मुक्त भारत 3. स्वाभिमान भारत गोष्ठियाँ, राष्ट्रमंथन, संवाद, सभा व गोष्ठी आदि का आयोजन तथा **घर–घर जाकर टू–रीच–द–वोटर, टू–टीच–द–वोटर का कार्यक्रम चलाकर पूरे देश को आन्दोलन के साथ खड़ा करना।**

## युवाओं के लिए तीन सूत्र

कन्ट्री, कैरियर एवं करेक्टर पर युवाओं को सबसे ज्यादा ध्यान देना चाहिए।

## संगठन के तीन राजनैतिक लक्ष्य

राष्ट्रविरोधी व जन विरोधी भ्रष्ट पार्टियों को हराना तथा आन्दोलन के साथ 100% सहमत पार्टियों को जिताना, साथ ही संगठन व आंदोलन से जुड़े नि:स्वार्थ भाव वाले निष्कलंक, कर्मठ, समर्थ व पूर्ण निष्ठावान् लोगों को संसद में भेजकर आंदोलनों के मुद्दों को पूरा करना। जब तक सरकार के **नीति निर्धारण** में हमारा सीधा हस्तक्षेप नहीं होगा, तब तक आंदोलन का पूरा लक्ष्य प्राप्त हो ही नहीं सकता।

## जीवन के तीन व्रत

1. नियमित योग करने का व्रत, 2. स्वदेशी पालन का व्रत, 3. नशा व व्यसनमुक्त जीवन जीने का व्रत।

# राष्ट्र की तीन मूलभूत शक्तियाँ

ज्ञान-शक्ति, आर्थिक-शक्ति व सैन्य-शक्ति। राष्ट्र की अर्थव्यवस्था सभी व्यवस्थाओं की पोषक होती है। ज्ञान-शक्ति धुरी है, केन्द्र है, मर्म है व बीज है। सैन्य-शक्ति भुजा व कवच है। मजबूत अर्थव्यवस्था मजबूत चरित्र और प्रखर ज्ञान ही मजबूत राष्ट्र का आधार है। कमजोर चरित्र के शासकों ने ही राष्ट्र की अर्थव्यवस्था को खोखला बना डाला, इसे घुन की तरह खा डाला, इसमें छेद और गुप्त द्वार कर दिए जहाँ से राष्ट्र का धन निकालकर कालेधन के रूप में विदेशों में ले जाया गया।

# आर्थिक व्यवस्था (G.D.P.) के तीन मूल आधार

1. कृषि, 2. उद्योग, 3. सेवा क्षेत्र। (एग्रीकल्चर, इंडस्ट्री एवं सर्विसेज़।)

## भारतीय अर्थव्यवस्था की तीन बड़ी वास्तविक सच्चाइयाँ

1. भारत कभी भी गरीब नहीं रहा, न है; परन्तु कालाधन, भ्रष्टाचार व अन्यायपूर्ण भ्रष्ट व्यवस्था के कारण अधिकाँश भारतीयों को गरीब बनाया गया है।
2. कालाधन, भ्रष्टाचार व अन्यायपूर्ण भ्रष्ट व्यवस्थाओं के अन्त के बाद भारत की कुल सकल घरेलू उत्पाद (G.D.P.), निर्यात तथा प्रतिव्यक्ति आमदनी कम से कम 10 गुना; बचत (सेविंग) व विकासदर (ग्रोथ-रेट) कम से कम दो गुना; सरकारी बजटीय घाटे (डैफिसिट) के स्थान पर हम सर्प्लस में होंगे तथा विश्व अर्थव्यस्था में 1.5% के स्थान पर हमारी 15% से 20% भागीदारी होगी।
3. गोल्ड, शेयर-मार्केट, वायदा बाजार (डिरेवेटिव मार्केट), माइनिंग, लैंड, रीयल स्टेट व इन्फ्रास्ट्रक्चर से लेकर हैल्थ, एजुकेशन, ड्रग्स एवं पॉलिटिक्स तक अलग-अलग आर्थिक क्षेत्रों में आज भी भारत

की लगभग 1 हजार लाख करोड़ रुपये की अर्थव्यवस्था है, परन्तु यह अधिकांशतः अन-अकाउन्टेड है। हम इसे अकाउन्टेबल और पारदर्शी बनायेंगे।

## तीन प्रायोजित झूठ

1. **इतिहास के नाम पर झूठः** भारत के वीरतापूर्ण इतिहास के स्थान पर राष्ट्र में आत्मग्लानि, हीनता, दीनता और कायरता जगाने वाला झूठ इतिहास के नाम पर रचा गया। स्वर्णिम अतीत को अंधकारमय युग बताकर, भारत की ज्ञान शक्ति, आर्थिक शक्ति, सैन्य शक्ति व चक्रवर्ती साम्राज्य आदि के बारे में न बताकर देश में कुण्ठा व कमजोरी पैदा की गई।
2. **अविष्कारों के नाम पर झूठः** भारतीय ज्ञान व अविष्कारों को छिपाकर केवल पश्चिमी देशों के अविष्कारों को महिमा-मंडित किया गया।
3. **विकास के नाम पर झूठः** पूरा यूरोप लूट, डकैती व अत्याचार करके केवल पिछले 150 वर्षों में पहली बार ताकतवर बना है तथा विज्ञान व तकनीकी के बल पर विकास करने का झूठा दम्भ दुनियाँ में फैलाया गया।

## तीन बड़े षड्यन्त्र

1. **बौद्धिक षड्यन्त्रः** अक्सर मीडिया के माध्यम से यह साज़िश रची जाती है। सत्य एवं ज्ञान को महत्व न देकर अज्ञान, झूठ और चाटुकारिता को पुरस्कृत किया गया, जिससे बौद्धिक जगत में परिश्रम-विमुख व अध्ययन-विमुख लोगों की संख्या बढ़ी है, जिनके लिए ज्ञान पवित्र नहीं है, पद-प्रतिष्ठा ही सर्वोच्च है। इन्हें

वर्तमान सत्ताएँ खरीद लेती हैं क्योंकि उनके पास लूट की अथाह दौलत है और इसके बल पर अनगिनत साजिशें ये क्रूर सत्ताएँ सत्य को दबाने के लिए करती रहती हैं। परन्तु सच्चे प्रतिभाशाली बौद्धिक इस जाल में नहीं पड़ सकते, क्योंकि बुद्धि का गुण ही है सत्यनिष्ठा व तत्वनिष्ठा। सच्चे बौद्धिकों का आह्वान है कि वे सत्यनिष्ठा, राष्ट्रनिष्ठा के साथ आगे आयें, साहस करें, सच बोलें व स्वधर्म व राष्ट्रधर्म को निष्पक्ष, निर्भय व निर्लोभ भाव से प्रमाणिकता के साथ निभाएँ।

2. **विदेशी षड्यन्त्रः** विदेशी कंपनियों, विदेशी सरकारों व विदेशी पैसों से संचालित N.G.O., W.S.F. तथा दुनियाँ की अन्य ताकतवर एजेंसियों व गुप्त शक्तियों के द्वारा बहुत ही गंभीर षड्यन्त्र किए जाते हैं।

3. **राजनैतिक षड्यन्त्रः** स्थापित सत्ता के पास अपरिमित शक्ति, साधन, धन, दौलत तथा बहुत प्रकार की एजेंसियाँ होती हैं, साथ ही कानून व सत्ता का दुरुपयोग करके वे किसी भी कीमत पर आंदोलनों को झूठा आरोप लगाकर बदनाम करने व दबाने, कुचलने व नष्ट करने पर तुली होती हैं तथा उनके लूट व पाप के विरुद्ध आवाज उठाने वाले व्यक्तियों को डराने, धमकाने यहाँ तक कि उनकी हत्या कराने का घिनौना काम करने से भी नहीं हिचकती। अतः आंदोलन व संगठन से जुड़े वरिष्ठ लोगों को इन सब षड्यन्त्रों से हर समय सावधान रहना चाहिए। सजगता, विवेक, आत्मबल और भगवद्-भक्ति के मौलिक बल से ही हमें इन षड्यन्त्रों का मुकाबला करना है।

**महामानव** – हर एक मानव में महामानव होने की शक्ति है तथा भारत में विश्व की महाशक्ति होने का सामर्थ्य है।

# कांग्रेस के आर्थिक, धार्मिक व राजनैतिक–तीन बड़े पाप क्या हैं?

1. **आर्थिक लूट, तबाही व शोषण–** जीप, बोफोर्स, कॉमन वैल्थ जी, 2जी, कोल जी से लेकर जीजा जी या दामाद जी घोटालों तक "घोटाला सहस्त्र नाम" का कांग्रेस ने विश्व कीर्तिमान बनाया है तथा 400 लाख करोड़ रुपये के कालेधन की लूट के लिए मुख्य रूप से गुनहगार व जिम्मेदार यही पार्टी है। देश की विश्व में प्रतिष्ठा खत्म करने, देश की गरीबी, बेरोजगारी, किसानों, मजदूरों व अन्य आम लोगों की बदहाली के लिए भी मुख्य रूप से कांग्रेस की गलत आर्थिक नीतियाँ, लूट व गैर जिम्मेदाराना रवैया ही कारण है। जल, जंगल, जमीन व भू–सम्पदाओं को लूटकर तथा वनवासियों को उनकी जमीन से बेदखल करके उन्हें नक्सलवाद व माओवाद की आग में धकेल दिया। यदि कांग्रेस की आर्थिक–नीति, विदेश–नीति, व्यापार–नीति, कृषि–नीति ठीक होती तथा राजनैतिक ईमानदारी होती तो आज भारत आर्थिक दृष्टि से कम से कम 10 गुणा आगे होता। वर्ल्ड बैंक, I.M.F., W.T.O., U.N.O. व W.H.O. का मुख्यालय भारत में होता। हमारे ISRO, DRDO जैसी अनुसंधान संस्थायें– अमेरिका की NASA, DARPA के समान विश्वस्तर पर अग्रणी व अत्याधुनिक होती तथा हार्वर्ड, मैसाचुसेट्स, ऑक्स्फोर्ड, कैम्ब्रिज जैसे विश्वस्तरीय प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय भारत में होते और भारत विश्व की आर्थिक महाशक्ति, ज्ञान–महाशक्ति और सैन्य–महाशक्ति होता।

2. **धार्मिक, सांस्कृतिक व सामाजिक पाप–** हर वर्ष सरकारी आँकड़ों के हिसाब से एक करोड़ से अधिक गोवंश की हत्या भारत में तथा एक करोड़ से अधिक गायों की तस्करी गोकसी के लिए बांग्लादेश में; हर गाँव, गली–मोहल्ला व सड़क पर शराब के ठेके जो कुल

मिलाकर देशभर में छोटे बड़े लगभग 50 लाख होंगे; दुश्चरित्रता फैलाने वाली दूरदर्शन प्रसारण नीति के कारण अश्लीलता, विलासिता, दुराचार व व्यभिचार चारों तरफ फैल रहा है और देश का पूरा वातावरण जहरीला बना दिया है। भगवान् राम, कृष्ण व शिव आदि महापुरुषों को काल्पनिक एवं रामायण व महाभारत आदि को उपन्यास बताकर धर्म की जड़ों को नष्ट करने का घृणित अक्षम्य अपराध तथा आत्मगौरव के सभी प्रतीकों, अपने धर्म, अध्यात्म, संस्कृति, संस्कार व सभ्यता के मूल तत्वों, योग-आयुर्वेद एवं वैदिक ज्ञान को षड्यन्त्र पूर्वक उपेक्षा करके नष्ट करने की साजिश इस पार्टी ने की है। हमारे वैयक्तिक चरित्र से लेकर आदर्श परिवार, आदर्श समाज व आदर्श राष्ट्र की मूल अवधारणा को नष्ट करके ओम् के देश को रोम का देश, सदाचार के देश को दुराचार का देश तथा राम के देश को रावण का देश, कामाचार और पापाचार का, धर्म विमुखता और धर्मविकृति का देश बनाने का षड्यन्त्र इस पार्टी ने किया है।

**3. राजनैतिक पाप–** ब्रिटिश साम्राज्य की रक्षा के लिए कांग्रेस की स्थापना ए.ओ. ह्यूम नाम के एक अंग्रेज अधिकारी ने की। आजादी के संघर्ष को कांग्रेस का संघर्ष स्थापित करने की नाकाम कोशिशें की गयी। कांग्रेस का अर्थ है जमावड़ा। कभी यह देशभक्तों का जमावड़ा बनी पर 1934 के बाद, जब सत्ता का हस्तांतरण (ट्रांसफर ऑफ पावर) सुनिचिश्त हो गया और गांधीजी ने कांग्रेस छोड़ दी, महामना मालवीय शिक्षा-कार्य में सीमित होने को विवश हो गये, तब से एक चालाक और कमजोर चरित्र वाले धड़े ने छल-कौशल से इसे एक व्यक्ति और परिवार के दरबारियों-चाटुकारों का जमावड़ा बनाना शुरू किया। अब यह एक परिवार के भक्तों का जमावड़ा (फेमिली-कांग्रेस) बन चुकी है। अंग्रेज-भक्ति से लेकर सत्ता की प्राप्ति तक आजादी के नाम पर 14 अगस्त को ''ट्रांसफर ऑफ पावर एग्रीमेन्ट'' पर हस्ताक्षर, छद्म राष्ट्रवाद,

छद्म समाजवाद, छल एवं प्रपंच से विदेशियों के साथ मिलकर देश की लूट में सम्मिलित रहने से लेकर देश के विभाजन तक अनगिनत पाप कांग्रेस के नेतृत्त्व करने वाले खानदान ने किए हैं। आजादी के बाद कश्मीर समस्या, कम्युनिस्ट इंटरनेशनल से जुड़कर रूस के षड्यन्त्र का शिकार होकर रक्षा-तैयारी की उपेक्षा, सदियों से भारत को गुरु मानने वाले तिब्बत पर कम्युनिस्ट चीन का कब्जा होने देने में एवं कैलाश मानसरोवर को गंवाने में, 1962 के चीन युद्ध में पराजय से लेकर, भारत नेपाल सम्बन्धों को ठीक से नहीं संभालने के फलस्वरूप नेपाल को राजनैतिक अस्थिरता में धकेलने तक तथा अदूरदर्शी विदेश नीति के चलते अफगानिस्तान, पाकिस्तान, श्रीलंका व अन्य देशों के साथ कूटनीतिक भूलों के कारण भारत की मूल आत्मा व अस्मिता पर बहुत बड़े गहरे घाव कांग्रेस ने दिए हैं। भारत के वीरता पूर्ण स्वर्णिम अतीत के स्थान पर राजनैतिक रूप से छद्म अहिंसा व पंचशील के झूठे नारे देकर देश के शौर्य व स्वाभिमान को रौंदा। यदि कांग्रेस ने नीतिगत व नीयतगत पाप नहीं किया होता तो आज भारत विश्व की राजनैतिक, आर्थिक व आध्यात्मिक महाशक्ति होता और ये बुरे दिन व देश की तबाही का मंजर हमें नहीं देखना पड़ता। **कांग्रेस आज कालाधन, करप्शन, कलंक, कैंसर व कंस का पर्याय बन चुकी है।** कभी माफ नहीं किये जाने वाले अनन्त पाप इसने किए हैं। वर्तमान में भी जब माताएँ रसोई गैस पर खाना पकाती हैं, किसान खेत में पूरी मेहनत करते हैं और उनको उपज का पूरा दाम नहीं मिलता, दुकानदार जब दुकान में बैठता है तो, F.D.I. का भूत उसे डराता है, कारीगर जब काम करता है और उसको दाम पूरा नहीं मिलता तो अक्सर सब भारतीय तथा कमोबेश सवा सौ करोड़ देशवासी खुद की व देश की बदहाली के लिए कांग्रेस के नेतृत्त्व की गलत नीतियों व गलत नीयत को कोसते रहते हैं। अन्ततः इन सबकी बद्दुआओं के कारण अब इनकी सत्ता से बेदखली सुनिश्चित

है। **जब तक कांग्रेस का सत्ता से पत्ता साफ नहीं होगा, तब तक देश को इंसाफ नहीं मिलेगा।** यद्यपि दूसरी पार्टियों ने भी कुछ पाप किये हैं, लेकिन कांग्रेस की तुलना में बहुत कम। उनके पास तो सत्ता भी कम ही समय रही। आजादी से पहले देश में नागरिक जीवन में कोई राष्ट्रीय स्तर पर बड़ा संगठन न होने के कारण कुछ अच्छे लोग भी कांग्रेस से जुड़े हुए थे, लेकिन मूलतः वे आर्य समाज व अन्य राष्ट्रवादी संगठनों से थे। इन अच्छे लोगों के तप, पुरुषार्थ और प्रभाव के कारण कांग्रेस ने पापों का पहाड़ खड़ा करने के साथ-साथ कुछे अच्छे कार्य भी किये हैं, लेकिन ये नगण्य से हैं। आज भी भीष्म, द्रोण, कृपाचार्य व कर्ण की तरह 10-20 कुछ देशभक्त ईमानदार लोग कांग्रेस में भी हैं तथा कांग्रेस के पापों का पूरा पता नहीं होने के कारण कुछ लोग इस पार्टी को आज भी वोट दे देते हैं। **जिस दिन सभी सच्चे देशभक्त लोग कांग्रेस व कांग्रेस का नेतृत्त्व करने वाले नेहरु खानदान के पापों को देश को बताना शुरू कर देंगे, तो कुछ ही समय में सारा देश इनसे घृणा करने लगेगा, यदि फिर भी कुछ लोग स्वार्थ, अज्ञान, आग्रह व भय से इनसे जुड़े भी रहेंगे तो भी ये देश की सत्ता पर काबिज होकर इसे लूट नहीं सकेंगे।**

**योग कक्षाएँ** – मानव सेवा से राष्ट्र सेवा, व्यक्ति-निर्माण, चरित्र-निर्माण से लेकर युग निर्माण, संगठन व आंदोलन के लिए सात्विक कार्यकर्त्ताओं के निर्माण, रोग, नशा, व्यसन, अज्ञानमुक्त उच्च चेतनायुक्त व दिव्य जीवन निर्माण के लिए निःशुल्क योग की कक्षाएँ ही संगठन की आधारशिला हैं। ये हमारी शक्तिपीठ या शक्तिकेन्द्र हैं। अतः प्रत्येक गाँव व शहर में नियमित योग कक्षाओं का निरन्तर संचालन हमें करना है।

**भद्रमिच्छन्त ऋषयः स्वर्विदः पोदीक्षामुपनिषेदुरग्रे।**

## भारत का स्वर्णिम अतीत एवं अखण्ड भारत की सीमाएँ

भारत का 1,96,08,53,113 वर्ष पुराना गौरवशाली अतीत है। आध्यात्मिक एवं भौतिक विकास के हर क्षेत्र में सृष्टि के आदिकाल से पूरे विश्व के लिए भारत का बहुत बड़ा योगदान रहा है। पूर्व में वर्मा (म्यांमार), बांग्लादेश, वियतनाम (चम्पा), थाईलैंड (श्याम देश), कंबोडिया (कम्बुज), लाओस (लवदेश), कोरिया व जापान तक, उत्तर में नेपाल, भूटान व तिब्बत (त्रिविष्टप्), चीन व मंगोलिया तक, पश्चिम में पाकिस्तान, अफगानिस्तान, ईरान व यूनान (यवन प्रांत) तक तथा दक्षिण में श्रीलंका, मालद्वीप, सुमात्रा, जावा, बाली व इंडोनेशिया तक भारत के शिष्य व मित्र देशों की, चक्रवर्ती साम्राज्य की सीमाएँ थीं। पूरा विश्व भारत के आध्यात्मिक नेतृत्व में चला करता था तथा भारत को अपना आदर्श व गुरु मानता था। हम कालाधन देश को दिलाकर भ्रष्टाचार, शोषण व अन्याय को मिटाकर अपने मित्र देशों के साथ सहयोग व सद्भाव स्थापित करके पुनः अखण्ड भारत का निर्माण करेंगे। तथा मित्र व शिष्य देशों से आत्मीय सम्बन्ध दृढ़ करेंगे।

**ग्राम समिति** – ग्राम, प्रखण्ड, बूथ व वार्ड समितियाँ- हमारे आंदोलन की धुरी या केन्द्र हैं। परिवर्तन की परिधि या दायरा सारा देश है। देश में परिवर्तन लाने में हम तभी सक्षम होंगे जब हमारा केन्द्र मजबूत होगा। एक-एक गाँव में जब 100 जवान, 100 किसान व 100 महिलाएँ खड़ी हो जायेंगी, तो आध्यात्मिक, सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक रूप से हम जो चाहते हैं देश हित में वह सब कुछ कर पायेंगे। **समितियों का निर्माण तथा वहाँ सेवा व आन्दोलन के तीन-तीन प्रकल्पों का निरन्तर संचालन- यही संगठन की सर्वोच्च प्राथमिकता है।**

# धर्म व कर्म का मर्म

गुरु, शास्त्र अनुभव, प्रकृति तथा परमेश्वर के द्वारा हो रही अन्तःप्रेरणा– ये ज्ञान के मूल स्त्रोत हैं। ज्ञान का कभी अनादर नहीं करना चाहिए अर्थात् पाँचों स्त्रोतों से जो ज्ञान व प्रेरणाएँ मिलती हैं, उसी के अनुसार जीवन जीना ही जीवन व धर्म का मर्म है। ज्ञान ही सुख, शान्ति, समृद्धि व मुक्ति का आधार या साधन है तथा अज्ञान ही रोग, वियोग, नुक्सान व अपमान रूप दुःख, अशान्ति, गरीबी व सब प्रकार के बन्धन का कारण है। ज्ञान व भक्ति पूर्वक मन लगाकर काम करने से हमें जीवन की सभी सफलताएँ मिलती हैं एवं दिव्य जीवन की प्राप्ति होती है। कर्म ही धर्म है, कर्म ही पूजा है, **'स्वकर्मणा तमभ्यर्च सिद्धिं विन्दति मानवः'**। कर्म का फल अनन्त गुणा होकर हमें मिलता है। ज्ञान, भक्ति व कर्म की पराकाष्ठा व तद्रूपता ही योग या समाधि है। वेदों के आदेश व पूर्वजों के आदर्शों पर चलना ही हमारे जीवन का ध्येय है।

# हमारे आन्दोलन व संगठन की मुख्य विचारधारा एवं सिद्धान्त
# (Ideology and Principals our Organization)

जल, जंगल, जमीन, भू–संपदा एवं अर्थव्यवस्था पर एकाधिकार स्थापित करने वाली साम्राज्यवादी, शोषणकारी व अन्यायपूर्ण व्यवस्था के विरुद्ध **आध्यात्मिक समतावाद व विकेंद्रित विकासवाद** के द्वारा सबको सामाजिक व आर्थिक न्याय दिलाकर मानवता व प्रकृति को बचाना।

**इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।**
**अपघ्नतो अराव्णः॥** *–ऋग्. 9/63/5*
**मा व स्तेन ईशत ( वेद )** *–यजु. अ.1/मं.1*

अर्थात् धरती पर भगवान्, सत्य या न्याय का साम्राज्य स्थापित करना। हम पर चोर व भ्रष्टाचारियों का शासन नहीं होना चाहिए।

सभी अध्यात्मधर्मा, शान्तिधर्मा, क्रान्तिधर्मा, ऋषि-मुनि, वीर-वीराङ्गनाओं, सन्तों, फकीरों व महापुरुषों की सामाजिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, आर्थिक व राजनैतिक विचारधारा ही हमारी विचारधारा है।

हमारे पूर्वजों का शुभ ही हमारी सच्ची विरासत है। हम वर्गीय भारतीयता के पोषक नहीं, अपितु समग्र भारत व भारतीयता के प्रबल समर्थक हैं, सर्व समाज की खुशहाली ही हमारा लक्ष्य है।

स्वामीजी निःस्वार्थ भाव से पूरे देश में ये आंदोलन चला रहे हैं। आप जहाँ हैं, वहीं उसी गाँव, गली, मोहल्ला व शहर में आंदोलन के इन मुद्दों और देश की सच्चाई के बारे में बताइये व संगठन से जुड़कर इसे ताकत दीजिए। जब घर-घर जाकर कार्यकर्त्ता जन-जागरण करेंगे, तो देश जरूर बदलेगा। हर इंसान अन्ततः सच के ही साथ खड़ा होता है। **सत्यमेव जयते।**

1. **99 का चक्रव्यूह–** 99% लोग शोषित वर्ग में आते हैं, 1% लोगों का जल, जंगल, जमीन, भू-सम्पदा एवं संसाधनों के साथ-साथ सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था पर एकाधिकार है।

   99% लोग अन्याय के खिलाफ संघर्ष करने का साहस नहीं कर पाते। 1% लोग जो इस स्थापित अन्यायपूर्ण भ्रष्ट व्यवस्था को बदलने के लिए संघर्ष करते हैं। उन्हें अपना सब कुछ दाँव पर लगाकर एक लम्बी लड़ाई लड़नी पड़ती है। 99% लोगों को रोजी-रोटी व रोजमर्रा के काम में बुरी तरह से उलझाया हुआ। 99% लोग नकरात्मक सोच के कारण किसी बड़े बदलाव के बारे में विश्वास ही नहीं कर पाते। 99% लोग इतिहास पढ़ने में विश्वास रखते हैं, 1% लोग ही कुछ ऐसा कर पाते हैं जो इतिहास बनता है। 99% लोगों की अन्तः शक्ति, ज्ञान, प्रतिभाव सामर्थ्य प्रायः सुप्त

होता है। परिणामतः ये निम्न चेतनायें ही अधिकांशतः जीते रहते हैं। 99% लोग अपनी अन्तः प्रेरणा को नहीं सुनपाते, इसी के कारण जगत में अधर्म व अंधेरा अधिक है। 99% लोग योग न करने के कारण तन या मन की व्याधियों के चक्रव्यूह में फंस जाते हैं।

2. **भावनाओं से खिलवाड़–** विज्ञापन, टी.वी. सीरियल्स, नेताओं के भाषण या फिर पार्टियों के घोषणा-पत्र सब खुशहाली के सपने दिखाते हैं, कृत्रिम भूख पैदा करते हैं (उपभोक्तावाद) और भावनाओं से खिलवाड़ करते हें, अपने चक्रव्यूह में फसाते व अन्ततः आम लोगों को धोखा मिलता है।
3. **बगावत–** स्थापित भ्रष्टपार्टियों के खिलाफ पूरे देश में गुस्सा, घृणा या बगावत का भाव है, वक्त आने पर तख्त पर बैठे लोगों को जनता सबक सिखायेगी।
4. **देश की भलाई में आपत्ति क्यों?–** यदि कांग्रेस व उसके सहयोगी दल देश व देशवासियों से प्यार करते हैं तथा आम लोगों को उनका हक या न्याय देना चाहते है, तो मजबूत लोकपाल बनाने व कालाधन देश को दिलाने व भ्रष्टाचार को मिटाने हेतु अन्य जरूरी कानूनी प्रावधान करने व अन्याय पूर्ण इस भ्रष्ट व्यवस्था को बदलने में उनको आपत्ति क्यों? तो इसका सीधा सा उत्तर है कांग्रेस नेतृत्त्व व उसके सहयोगी दल खुद पाप की दल-दल में फंसे हैं, अब उनसे इंसाफ की उम्मीद बेकार है, इनको सत्ता से बेदखल करने हेतु इनका सामाजिक व राजनैतिक बहिष्कार नितान्त आवश्यक हैं कांग्रेस तो भ्रष्टाचार की गंगोत्री बना चुकी है, ऐसा हम आरोप नहीं लगा रहे हैं, अपितु वह खुद अपने आचरण से एम्सपोज हो चुकी है।
5. **सवा-सौ बनाम सवा-सौ करोड़–** लगभग सवासो भ्रष्ट लोगों व उनके द्वारा संरक्षित लोगों ने सवासौ करोड़ देशवासियों या आम जनता का हक छीन लिया है, उनकी खुशियों को रोंदकर या कुचलकर रख दिया है। हम सबको मिलकर अपना ये मौलिक व

संवैधानिक हक लेना है, हम भ्रष्ट लोगों से कोई भीख नहीं माँग रहे हैं।

6. **अविश्वास-कुछ नहीं हो सकता–** राजसत्ता, धर्मसत्ता या समाज के तथाकथित बड़े लोगों ने समाज के साथ इतनी बार छल, धोखा या विश्वासघात किया है, कि लोगों में घोर निराशा व अविश्वास है। आम आदमी को लगता है, कि वह अकेला कुछ नहीं कर सकता, इन स्थापित ताकतवर लोगों को उखाड़ फेंकना बड़ा कठिन है। जबकि हकीकत यह है कि हम अकेले कभी नहीं होते हैं, जब हम आगे बढ़ते हैं तो समाज व सृष्टि की सभी सात्त्विकशक्तियाँ हमारे साथ खड़ी हो जाती हैं। स्थापित भ्रष्टतन्त्र चाहे कितना ही ताकतवर हो, परिवर्तन सृष्टि का शाश्वत विधान है सृष्टि के लगभग दो सौ करोड़ वर्षों से लेकर पिछले दो वर्षों के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक व राजनैतिक बड़े परिवर्तन इस बात के पुख्ता प्रमाण हैं।

7. **पार्टियों का नेतृत्व खुद में झाँके–** खान-पान-आहार-व्यवहार एवं सम्बन्धों में सब को शुद्धता, प्रामाणिकता चाहिए, अपने इलाज कराने व सम्बन्धों में भी हम श्रेष्ठष्तम इंसान को चुनते हैं तो फिर राजनीति में क्यों नहीं ? आज महंगाई, बेरोजगारी, गरीबी, पक्षपात, आर्थिक व सामाजिक गैर-बराबरी के कारण जो पीड़ा इस देश का आम आदमी, पिछड़ा, अति पिछड़ा, दलित, वाल्मीकि, आदिवासी, अल्पसंख्यक तथा सवर्णों में भी बहुत से असमर्थ लोग झेल रहे हैं- वही पीड़ा, गरीबी, भूख अन्याय व अपमान इन भ्रष्ट पार्टियों के नेतृत्त्वों को या उनके बच्चों को झेलनी पड़ती तो क्या वे इस व्यवस्था को ठीक करने के बारे में नहीं सोचते ? देश व देशवासी आम आदमी के बारे में भी अपनों की तरह सोचो।

8. **विकास का श्रेय–** देश के विकास का श्रेय तथा आजादी का श्रेय यहाँ के मेहनतकश किसानों, नौजवानों, उद्यमियों, श्रमिकों, कारीगरों, देशभक्त नागरिकों, पेशेवर प्रतिभावान, वैज्ञानिकों व अन्य विशिष्ट लोगों के है। अधिकांश भ्रष्ट सत्ताधीशों ने देश को लूटा है, इसलिए

वे देश के विकास का श्रेय नहीं ले सकते, हाँ विनाश की अधिकतम जवाब देही व श्रेय उनकी साम्राज्यवादी विकास के मॉडल जिसमें जल, जंगल, जमीन, भूसम्पदा, संसाधनों व सम्पत्ति पर कुछ ताकतवर लोगों को एकाधिकार कायम हो गया है। गलत आर्थिक नीतियों, भ्रष्टाचार, निरंकुश अपारदर्शी शासन के कारण भ्रष्ट, लुटेरे एवं आपराधिक प्रवृत्ति के लोगों को दण्ड न मिलने तथा सज्जन शक्ति या ईमानदार पुरुषार्थी सत्यनिष्ट व राष्ट्रनिष्ठ लोगों का संरक्षण, सम्मान व प्रोत्साहन न मिलने के कारण **बुराई व बुरे लोगों को प्रतिष्ठा, प्रोत्साहन व संरक्षण मिलता गया इससे देश बर्बाद हुआ है।**

9. **विनाशकारी विकास–** देश के आधुनिक सत्ताधीशों ने विकास के नाम पर केवल मनुष्य के विनास की बात की और मनुष्यों में भी एक प्रतिशत मनुष्यों का देश पर एकाधिकार कायम हो गया। 99% आम आदमियों को उससे वंचित कर दिया गया। मनुष्य के लिए विकास के मूल तत्त्व हवा, जल, जंगल, जमीन, भूसम्पदा, संसाधन, सम्पत्ति व पूरी प्रकृति को दाव पर लगा दिया। इसी का परिणाम है, गैर–बराबरी, महंगाई, बेरोजगारी, गरीबी, नक्सलवाद, जातीय व वर्गीय हिंसा व अन्य सामाजिक राष्ट्रीय व अन्तराष्ट्रीय समस्याओं में देश धू–धू करके जल रहा है। साइनिंग इंडिया व बर्निंग इंडिया की बहुत बड़ी खाई खड़ी हो गई है।

10. **लूट व तबाही के आंकड़े–** कालाधन (घोटाला, घाटा एवं दलाली), भ्रष्टाचार, जल, जंगल, जमीन, भूसम्पदा, राष्ट्रीय संसाधनों एवं सम्पत्ति की लूट के साथ–साथ, गोहत्या, भ्रूण हत्या, दहेज हत्या, किसानों की आत्महत्या, वनवासियों की तबाही ही व अन्य व्यवस्थागत आर्थिक राजनैतिक, धार्मिक व सांस्कृतिक पाप इन पार्टियों ने किए हैं इसका पूरा विवरण व अपडेट्ज के लिये भारत स्वाभिमान की वेब साइड पर अवश्य देंखे तथा दूसरों को भी देखने के लिए प्रेरित करें।

11. **अच्छे लोग मिलकर काम क्यों नहीं कर लेते–** ऊपर–ऊपर से जब धार्मिक, आध्यात्मिक, सामाजिक एवं राजनैतिक शीर्ष लोग व संगठन सच्चाई, ईमानदारी, देश व देशवासियों की और खास करके आम आदमी की भलाई व खुशहाली की बात करते हैं परन्तु अक्सर सभी संगठन, आन्दोलन व पार्टियाँ आदि एक गुप्त एजेन्डा व गुप्त या परोक्ष शक्तियाँ खास करके बैंक, बैंकर्स या मेगा केप्टिललिस्ट या अन्य रहस्यमयी शक्तियों के सहयोग या इशारों पर काम करते हैं। पूरी दुनियाँ लैफ्टिस्ट, राइटिस्ट, साम्राज्यवाद, साम्यवाद व समाजवाद, वर्गीय भारतीयता, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, अवसरवाद, दलितवाद, स्वर्णवाद, मजहबवाद, जातिवाद व प्रान्तवाद आदि जटिल विचार धाराओं एवं जटिल सिद्धान्तों में बटी हैं। देश का अधिकतर शीर्ष नेतृत्व भी हॉवर्ड, ऑक्सफोर्ड व कैम्ब्रीज आदि विदेशी संस्थानों में तैयार हो रहा है, जो विदेशी शिक्षा व संस्कारों की अपसंस्कृति का प्रबल पोषक बनता जा रहा है, जबकि प्राचीन भारत के शासक गुरुकुलों में ऋषि सत्ता के द्वारा तैयार किये जाते थे, अत: संगठित होकर काम करने में बड़े संगठनों व व्यक्तियों के लिए बहुत बड़ी चुनौती व समस्या है। 99% आम आदमी इन जटिलवादों को समझ नहीं पाते, वे तो बस अपने लिए समाज व देश के लिए न्याय व हक चाहते हैं। हमने अपनी विकेन्द्रित विकासवाद व आध्यात्मिक समतावाद की एकदम सीधीसादी सरल सहज सर्वोदय की विचारधारा व सिद्धान्त को संक्षेप में आपके सामने रख दिया है। इसके अलावा हमारा कोई गुप्त एजेण्डा नहीं हैं तथा किसी भी देशी, विदेशी रहस्यमयी शक्तियों या एंजेंसियों से हमारा कोई सम्बन्ध नहीं है।

आखिरी दम तक हमारा पूरी ईमानदारी से यह प्रयास रहेंगा कि देश की सात्त्विक सज्जन शक्तियाँ या संगठन अपने–अपने फिक्स या हिडन एजेण्डा व अहंकार आदि छोड़कर नि:स्वार्थ व निष्कामभाव

से देश के लिए मिलकर काम करें। भगवान् से भी यही प्रार्थना करते हैं कि भगवान सभी शीर्ष संगठनों के नेतृत्त्व को ऐसा प्रबल विवेक दें कि सब ***संगच्छध्वम् संवदध्वम्*** के वेद के शाश्वत सन्देश का पालन करके देश को बचाएँ।

12. **मतदाता जागरण अभियान क्यों जरूरी है?–** आज देश में औसत मतदान 50% से 60% ही हो रहा है। इसमें छोटी-बड़ी राजनैतिक पार्टियों व निर्दलीय उम्मीदवारों में वोट बंटते या पड़ते हैं। जिसको भी 10%-20% वोट पड़ जाते हैं वो जीत जाता है। अत: टारगेट करके जो कभी भी मतदान नहीं करते उनको हमें ढूँढ़ के बाहर निकलना है। ये नये मतदाता तथा देश भक्त लोग, असमर्थ वंचित लोग, पिछड़े अति पिछड़े मंहगाई, बेराजगारी, गरीबी कि मार झेल रहे लोग हमारे साथ बेस वोट के रूप में जुड़ेंगे साथ ही योग, आयुर्वेद व स्वदेशी आदि की सेवाओं से लाभान्वित 11 करोड़ से ज्यादा लोग शिविरों तथा टी.वी. आदि कार्यक्रमों से लाभान्वित प्रभावित एवं प्रकाशित लोग हमारी ताकत बनेंगे। घर-घर जाकर हमें अपने सभी मुद्दों व एजेण्डा की बात रखनी है और उन्हें अपने साथ गंभीरता व निरन्तता के साथ जोड़ता है।

13. **पैसा-प्रतिष्ठा–** इन दोनों के खोने का भय जिस दिन खत्म हो जाता है, हम देश व दुनियाँ में कुछ भी कर सकते हैं, क्योंकि इसके सिवा खोने को कुछ होता ही नहीं है। दो वक्त की रोटी, दो कपड़े व दो गज जमीन जीने के लिए थोड़ी भी मेहनत करने वाले को मिल ही जाती हैं।

    इससे ज्यादा जो कुछ भी होता है वह सरप्लस सेविंग होता है जो अपने नहीं किसी ओर के ही काम आता है।

14. ***उचित अनुचित–*** धर्मपूर्वक, विद्यायुक्त, वेदानुकूल अथवा आत्मानुकूल काम, क्रोध, लोभ, मोह, विरोध, हस्तक्षेप, संघर्ष, संग्रह, पैसा, प्रतिष्ठा एवं देश, धर्म व संस्कृति आदि की रक्षा हेतु युद्ध व हिंसा की नीति युक्त व्यवहार उचित व शुभ होता है।

15. **आन्दोलन–** पिछले दो हजार वर्षों के बीच सुधार के जो भी आन्दोलन चले, उन सबने जीवन का एक ही पक्ष लिया, दूसरी की उपेक्षा कर दी। इसके लिए उनकी योजनाएँ क्रान्तिकारी होते हुए भी आन्दोलन से सफलता न प्रदान कर सकीं। (श्री जय प्रकाश नारायण जी)

    **नोट–** भारत स्वाभिमान सामाजिक सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनैतिक रूप से आन्दोलन के सभी पक्षों को एक साथ लेकर कार्य कर रहा है अतः व्यक्ति व व्यवस्था में, व्यष्टि व समष्टि में समग्र परिवर्तन अवश्य आयेगा।

16. **स्वदेशी अर्थव्यवस्था–** भारत की व्यापक गरीबी का बहुत बड़ा कारण आर्थिक क्षेत्र से स्वदेशी की भावना का तिरोभाव भी है। यदि विदशी वस्तुओं का आयात इस देश में न होता, तो यहाँ दूध-दही की नदियाँ आज बहती होती। (महात्मा गाँधी)

    **अतीत से प्रेरणा–** कोई भी विचारधारा या व्यवस्था तब तक सफल नहीं हो सकती या राज्य-पद्धति के स्वस्थ विकास में सहायक नहीं हो सकती, जब तक कि उसकी भित्ति देशविशेष की परिस्थितियों, परम्पराओं और मान्यताओं पर खड़ी न हो। (श्री जय प्रकाश नारायण जी)

17. **भारत का शहरीकरण-उचित नहीं–** पाश्चात्य सभ्यता नगराधारित है। ब्रिटेन अथवा इटली जैसे छोटे देश अपनी पद्धति नगराधारित कर सकते हैं। अमेरिका जैसे अल्प जनसंख्यावाले बड़े देश भी कदाचित् इस पद्धति का अवलम्बन कर सकें। किन्तु जनसंख्याबहुल और आज भी उपयोगी प्राचीन ग्राम-परम्पराओं से युक्त किसी बड़े देश (भारत) को पश्चिम के इस आदर्श का किसी भी हालत में अनुकरण नहीं करना चाहिए। (महात्मा गाँधी)

18. **ग्राम समितियों की शाश्वत परम्परा–** संसार के किसी भी देश में भारत जितनी धार्मिक और राजनीतिक क्रान्तियाँ नहीं हुई हैं, फिर भी ग्राम-समितियों के कार्यों पर कोई आँच नहीं आयी। वे समग्र

देश में सदा की भाँति एकरस स्थानीय हित के कार्यों में लगी रहीं। सीथियाई, यूनानी, सरासीन, अफगान, मंगोल और मराठे अपने पार्वत्य निवासों से निकलकर बाहर आये तथा पुर्तगाली, डच, अंग्रेज, फ्रांसीसी और डेन समुद्र मार्ग से आकर भारत में जमे और शासक बने। किन्तु गाँवों के धार्मिक-व्यापारिक संघटनों का काम यथापूर्व चलता रहा। जैसे ज्वारभाटे का कोई प्रभाव चट्टान पर नहीं पड़ता, वैसे ही इन संघटनों पर आक्रामकों के आगमन-निर्गमन तका कोई प्रभाव न पड़ा। (सर जॉर्ज बर्डउड)

19. **ब्लैकमनी का खतरनाक दुरूपयोग–** आतंकवादी व नक्सलवादी इसी कालेधन से पनपते हैं तथा हमारे सीने में लगने वाली गोली इसी कालेधन से खरीदी जाती हैं। कालेधन से भ्रष्ट नेता वोट खरीदते हैं, चुनाव में शराब से लेकर अन्य कालेधन्धों में इसका दुरुपयोग करते हैं। गोल्ड, लैण्ड तथा ड्रग्स आदि के कारोबार में कालाधन ही लगता है इससे एक तो जमीन आम आदमी के पहुँच से बाहर हो जाती है तथा अवैध ड्रग्स के धन्धे से युवाधन बर्बाद होता है। गोल्ड आदि में पैसा लगता है तो यह अनुत्पादक होता है शेयर मार्केट या स्टोक मार्केट का कन्ट्रोल देश के दुश्मन आतंकवादी व भ्रष्ट लोगों के हाथों में चला जाता है, जो बहुत खतरनाक हो सकता है। इस मुद्दें पर अधिक जानकरी के लिए **'कालेधन का पूरा सच'** हमारी वेब्साइट पर अवश्य पढ़ें।

20. **कलयुगी महारावण–** आज के भ्रष्टलोग तो रावण, कंस व अंग्रेजों से भी बुरे हैं वे लूट का सामान अपने देश में तो रखते थे, ये तो देश को लूटकर धन विदेशों में जमाकर रखते हैं।

21. **करप्ट सिस्टम का बड़ा नुकसान–** देश के खराब सिस्टम की वजह से करीब 5 करोड़ प्रतिभावान लोग बाहर चले गये तथा 5 करोड़ बांग्लादेश व पाकिस्तान आदि से अवैध रूप से घुसकर देश के लिये खतरा बन गये।

22. **घर-घर संदेश पहुँचाना–** गाँव एवं शहर के कार्यकर्त्ताओं को घर-घर जाकर संकल्प-पत्र के अनुसार यह बताना है कि बेरोजगारी-गरीबी व गैर बराबरी से मुक्त आदर्श राष्ट्र हमें कैसे बनाना है।

## सभी राजनैतिकपार्टियों के प्रत्याशियों को एक शपथ-पत्र देश को देना चाहिए–

**क.** मैं राजनैतिक जीवन में चारित्रिक, आर्थिक व आपराधिक दोषों से सदा मुक्त रहूँगा।

**ख.** मेरा देश-विदेश में कहीं भी अवैध धन अर्थात् कालाधन तथा अवैध सम्पत्ति (काली सम्पत्ति) नहीं है। मेरे द्वारा घोषित सम्पत्ति के अलावा यदि कही भी मेरा कालाधन या कालीकमाई मिले तो उसे तुरन्त जब्त करके राष्ट्रीय सम्पत्ती घोषित कर दिया जायें। मेरी व मेरे परिवार की सम्पूर्ण सम्पत्तियों का निष्पक्ष ब्योरा मैं नियमित रूप से इन्टरनेट पर उपलब्ध करवाऊँगा।

**ग.** मैं कालाधन, भ्रष्टाचार व व्यवस्था परिवर्तन के सभी मुद्दों पर पूर्ण रूप से पूरी प्रमाणिकता व ईमानदारी से कार्य करूँगा।

**नम्रनिवदेन– यद्यपि इस आन्दोलन के आयाम बहुत व्यापक है तथा एक छोटी सी पुस्तिका में विस्तार से सभी मुद्दों का समग्र समावेश सम्भव नहीं है। अतः संक्षेप में आन्दोलन के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक व राजनैतिक दृष्टिकोण को यहा प्रस्तुत किया है। सभी प्रबुद्धजनों, राष्ट्र के हितचिन्तक सभी देशभक्त नागरिकों एवं वरिष्ठ कार्यकत्ताओं से विनम्र आग्रह है कि वे अपने सुझाव हमें तुरन्त भेजें, जिससे कि अगले संस्करण में आवश्यक संशोधन किया जा सके।**